आत्मनियंत्रण वाला व्यक्ति कभी गलत कार्य नहीं कर सकता

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 3 मई।

जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री मह्यपज्ञ उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि ''दुनिया में सब एकरूप नहीं है व्यक्ति का चेहरा भी भिन्न है और विचार भी भिन्न होते है। उन्होंने कहा कि जीभ का भी अलग स्वागत होता है किसी को मीठा अच्छा लगता है तो किसी को कड़वास अच्छा लगता है। किंतु कभी कड़वा भी खाना पड़ता है। व्यक्ति को प्रिय है वही अच्छा लगता है किंतु कभी अप्रिय का भी प्रयोग करना चाहिए। कोई वस्तु प्रयोग में अच्छी लगती है किंतु उसका परिणाम अच्छा नहीं हो सकता इसलिए व्यक्ति को परिणाम पर विचार करना चाहिए।''

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि आज के युग में व्यक्ति को भोगप्रदान बन गया है। भोग का दृष्टिकोण इतना परिपक्व कर दिया कि एक समस्या पैदा हो गई। जो भोगवादी का दृष्टिकोण बनाया उसका परिणाम स्वयं को भोगना पड़ रहा है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने किसी व्यक्ति को गलत प्रेरणा नहीं देने की चर्चा करते हुए कहा कि किसी दूसरे व्यक्ति को अच्छी सीख देनी चाहिए किसी को गलत सीख नहीं देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गलत बात सिखाओगे तो वह दूसरों का अहित करेगा। दूसरा नहीं मिला तो जो सिखाने वाला है उस पर प्रहार कर देगा। जो गलत बात सीखाने वाला वह बदल जाता है किंतु जो सीखने वाला अर्थात जिसने सीखा है वह पकड़ लेता है उसे बदलना कठिन होता है वह उसकी धारणा बन जाती है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि जब व्यक्ति का व्यवहार, आचार और दृष्टिकोण विपरीत बनता है तो उसका परिणाम भी सामने विपरीत ही आता है। यह विपर्यय इसलिए होता है कि व्यक्ति सच्चाई को पकड़ नहीं पाता है। किसी भी व्यक्ति को अनात्मवादी उपभोगवादी बनाओ, संयम त्याग से दूर रखो तो वह सबसे पहले सिखाने वाले व्यक्ति को ही धोखा देता है जहां अपना प्रयोग सिद्ध होता है वहां वह सबकुछ करने तो तत्पर हो जाता है। जिस व्यक्ति का मन पर नियंत्रण होता है वह कभी गलत काम नहीं करता है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने कहा कि भारतीय संस्कृति में आचार पहला धर्म है, आचार की अपेक्षा हर वर्ग, पीढी के लिए है। युवा पीढी का अपना आचार होता है। हर व्यक्ति को अपने आचार के प्रति सावधान होना जरूरी है। लेकिन सावधानी तब हो जब आचार का बोध हो। भगवान ने यह भी कहा है पहले ज्ञान हो उसके बाद आचरण। ऐसा मानना चाहिए कि जैन दर्शन में ज्ञान और आचार दोनों का बराबर महत्त्व है। आचार के बिना कोरा ज्ञान व्यक्ति को शिखर तक नहीं ले जाता। व्यक्ति अपनी ज्ञान चेतना को ही जगाए। बिना श्रद्धा विश्वास की न ज्ञान की आराधना की जा सकती है। आस्था के अभाव में सरल काम भी कठिन हो जाता है।